THE RESEARCH JOURNAL OF ENVIRONMENT, CULTURE AND DEVELOPMENT (T.R.J.E.C.D.)
A Monthly International Journal of Multidisciplinary Research, Peer Reviewed-Refereed & Impact Factor - 4.8
ISSN : 2349-3313, Vol. : 10, No. : 8, January - 2025, Conference Special Issue Hindi

पर्यटन और प्राकृतिक

Lalita Devi
Assistant Professor, Department of Home Science, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand

प्रस्तावना :– जैसा कि हम जानते हैं कि हमारा देश, भारत प्राकृतिक क्षटाओ एवं वन संपदा से परिपूर्ण है। यहां कि कल–कल बहती नदिया, वनों को सुरक्षित रखें जंगली जानवरों, यहां की संपदाएं हैं। जैसे सोना, चांदी, लोहा, अल्मुनियम, कार्बोनेट, इत्यादि हमारे देश भारत की प्राकृतिक में समाहित है। एक सुंदर सी मनोरम प्राकृति को पर्यटन के रूप में दर्शाती हैं। हमारे देश भारत की प्रकृति स्वयं में पर्यटन स्थल है। यहां की प्राकृतिक सौंदर्य, सुंदरता देश–विदेश के लोगों को मन के मोहे रहता है। हमारे देश भारत में तरह–तरह के प्राकृतिक पर्यटन स्थल बनाए गए हैं। यहां की प्राकृति सांन्धी को देखने बड़े से बड़े टूरिस्ट, रिसर्चर अपने शोध के विषयों को लेकर आते हैं, प्राकृतिक का आनंद लेते है और इन्वेंशन भी करते हैं। हमारा देश भारत प्राकृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक तीनों रूप से परिपूर्ण है।

यहां के धर्म संस्कृति भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहां के धर्म, संस्कृति, पर्व, त्यौहार सभी प्राकृतिक से जुड़ी हुई है। हमारे देश भारत में प्राकृतिक की पूजा की जाती है। धर्मस्थल को भी एक पर्यटन की दर्जा दिया जाता है। पेड़ – पौधे नदियों, जंगलों, जानवरों सभी की पूजा की जाती है। यहां के पर्यटन स्थल में टूरिस्ट का आवागमन होते रहता है। प्राकृतिक के गोद में बसे ये पर्यटन स्थल के लिए आनंद, मानसिक शांति एवं शारीरिक शांति की अनुभूति होती है। यहां की नदियां, यहां की झरना, यहां की जैविक उद्यान, टूरिस्टों के मन को मोहते रहता है। भारत में पर्यटन स्थल ज्यादातर प्राकृतिक से सीधा संबंध बनाता है। कृषि प्रधान देश होने के कारण आधे से अधिक जनसंख्या गांव में निवास करती है। यहां कृषि के अलावा प्राकृतिक संप्रदाय पर्यटन स्थलों से भी रोजगार की अवसर मिलते हैं। यहां के प्राकृतिक का वर्णन हमारे वेदों, पुराणों ,में भी वर्णित है। कहा जाता है कि वेदो पुराने में गुरुकुल से लेकर अपना आश्रम भी यही प्राकृतिक की गोद में रहा करता था।

पर्यटन स्थल चाहे ऐतिहासिक हो, धार्मिक हो या प्राकृतिक हो हमारे देश की सुंदरता एवं सैन्दरय का प्रतीक है। प्रकृती की सुंदरता एवं सौन्दर्य को संजोय रखने के लिए हम मानवों को जगने की जरूरत है।

प्राकृतिक पर्यटन का अर्थ :– प्राकृतिक सौन्दर्य, जैविक विशेषता पर्यटन और प्राकृतिक का गहरा संबंध है जब हम पर्यटन की बातें करते हैं तो केवल ऐतिहासिक स्थलों एवं आधुनिक शहरों का भ्रमण नहीं होता बल्कि यह प्राकृतिक की अद्भत दृश्य और प्राकृतिक धरोहरों का अनुभव करती है। प्राकृतिक के साथ पर्यटन न केवल हमें शांति और सुकून प्रदान करता है बल्कि, यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। भारत में पर्यटन का एक बड़ा हिस्सा प्राकृतिक स्थल जैसे पहाड़, झील, जंगल, समुद्र तट और अन्य सौंदर्य से जुड़ा हुआ है।

प्राकृति आकर्षण भौगोलिक या जैविक विशेषता का प्रतीक है। यहां का प्राकृतिक पर्यटन एक विशिष्ट आकर्षक हैं, चाहे वह ग्रामीण पर्यटन हो या शहरी पर्यटन हो वैश्विक स्तर पर प्राकृतिक आकर्षण एवं सौंदर्य का अनगिनत किस्मे हैं। कोई भी प्राकृति पर्यटन एक ऐसा नहीं होता है। क्योंकि इसके आसपास के वातावरण की एक अलग ही प्राकृतिक शक्तियों द्वारा अकार दिया जाता है। प्राकृतिक पर्यटन का एक अलग ही स्वरुप है। प्राकृतिक पर्यटन एवं सौन्दर्य का अलग देखने लायक पर्यटन स्थल है। कहीं रेगिस्तान, तो कहीं वर्षा, वन तो कहीं बर्फ ही बर्फ, तो कहीं सदाबहार वन, तो कहीं घास का मैदान, कहीं जैविक उद्यान, तो कहीं पर्वत, झरने, तो कहीं घने जंगल, तो कहीं फूलों की घाटी, कहीं महासागर, की गुफाएं, कहीं चटानें, नदियों, यह सभी प्राकृतिक पर्यटन का मुख्य आकर्षण केंद्र हैं। यही आकर्षक चीजों एवं जगह को देखने के लिए टूरिस्ट पर्यटन स्थल पर जाते हैं।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल का कुछ मुख्य बिंदु है। प्राकृतिक की भव्यता और आनंद लेने के लिए शहरी जीवन के दबाव से बचने के लिए, मानवता से बचने के लिए रोजमर्रा की जिंदगी से निकलकर प्राकृतिक आनंद लेने के लिए विभिन्न शोध एवं इन्वेंशन के लिए प्राकृतिक परिवेश में रहने के लिए प्राकृतिक के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए वन एवं जीव जंतुओं को संरक्षित रखने के लिए।

प्राकृतिक पर्यटन का महत्व :– प्राकृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है यह न केवल हमारे जीवनदायिनी है बल्कि हमारी मानसिक शांति का स्रोत है। हरियाली, पहाड, झिलें, समुद्र, वनस्पतियां, एवं जीव–जंतु यह सभी प्रकृति के अद्भत हिस्से हैं, जो न केवल पर्यावरण संतुलन को बनाये रखते हैं बल्कि हमें मानसिक शांति एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रदान करते हैं और वन संपदा को सुरक्षित बनाए रखता है। यह पर्यटन प्राकृति की गोद में बसी पर्यटकों को के मन को मोहते रहती

है। प्राकृतिक पर्यटन के पास जाने के बाद एक अच्छा आनंद का अनुभव करते हैं। वहाँ का हर रूप हमारे जीवन का किसी न किसी तरह का योगदान देता है। जैसे जल, हवा, मृदा, सूरज की किरणें, सभी प्राकृतिक तत्व जीवन के लिए आवश्यक है। प्राकृतिक से हम केवल जीवन के आवश्यक तत्वों को प्राप्त नहीं करते बल्कि वहां की दृश्य एवं उस मनोरम स्थान को देखकर मानसिक तनाव को दूर करते हैं। जब हम जंगल की सैर करते हैं। पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ते हैं। या समुद्र तट पर चलते हैं तो हमें शांति एवं आनंद की अनुभूति होती है। प्राकृतिक पर्यटन हमारे शरीर को ताजगी एवं ऊर्जा प्रदान करते हैं एवं मानसिक संतुलन बनाए रखता हैं।

पर्यटन के प्रकार :– प्राकृति पर्यटन इको टूरिज्म पर्यटन में केवल और केवल पर्यावरणीय वातावरण जंगल, पहाड़, नदी, झरना, जंगलीजीव, ग्रामीण परिवेश, झील, और समुद्र, इत्यादि शामिल होते हैं। लोग उसी पर्यटन स्थल को देखने जाते है और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हैं।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन में ऐतिहासिक और संस्कृति स्थलों का दौरा करते हैं और वहां की धर्म परंपराएं से अवगत होते हैं। एवं ऐतिहासिक इमारतें, किलो, स्मारक एवं प्राकृतिक से जुड़ी धर्म स्थलों को देखने का मौका मिलता है। वहां की पुरानी प्रथाएं, अवधारणाएं, वहां के राजा एवं वहां की शासन व्यवस्थाएं, मंदिर की पुरानी मान्यताएं, वहां की स्मारक पुरानी महल, एवं किले के बारे में जाने एवं देखने को मिलता हैं।

इसमें साहससीक पर्यटन टेकिंग पर्वतारोही ,जल क्रीड़ा, अन्य साहसिक, गतिविधियां शामिल होती हैं वहां प्रकृति का अधिकतम उपयोग किया जाता है ऐसी पर्यटन में देश–विदेश एवं स्थानीय लोगों को शाहसिक अभ्यास के लिए जाते हैं। इस शाहसिक पर्यटन से कई प्रकार के लाभ हो सकते हैं अपने जीवन का कैरियर बनाने का अवसर भी मिलते हैं जिसे अपना जीवन सुखमय में बनाया जा सके।

भारत जैसे देश में धार्मिक स्थल तीर्थ यात्रा मंदिर, मस्जिद आदि पर्यटन बहुत ही लोकप्रिय है। यहां की धर्म परंपराएं भारत की धर्म संस्कृति प्राकृतिक से जुड़ी हुई हैं पेड़ –पौधे को पूजा स्थानीय देवी देवताओं की पूजा तीर्थ यात्रा जैसे वर्तमान में महाकुंभ के मेले का आयोजन किया जा रहा है, वह सबसे बड़ा पर्यटन स्थल है। बाबा बैजनाथ धाम की तीर्थ यात्रा, जगनाथ पुरी की तीर्थ यात्रा, गंगा आरती, छठ महापर्व, अन्य ऐसी धार्मिक पर्यटन के रूप में आते हैं। धार्मिक पर्यटन से लाभ और हानि दोनों होता हैं। हमारे देश भारत के पर्यटन को देखने देश–विदेश से टूरिस्ट लोग आते हैं और वहां से आनंद उठाते हैं और अण्वेषण करते हैं।

प्राकृतिक और पर्यटन में सामंजस्य :– जब हम पर्यटन की बातें करते हैं तो अक्सर हम प्राकृतिक से जुड़ी विभिन्न जगहों पर जाते हैं। जैसे पहाड़ों, जंगलों, झीलों, झरनों, राष्ट्रीय उद्यानों, का यात्रा करते हैं। यहां पर यात्रा का उद्देश्य केवल मनोरंजन होता है बल्कि हम प्राकृतिक के संरक्षण एवं समझ के बारे में अधिक जानते हैं। यह सामंजस्य इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें समझने की जरूरत है कि पर्यटन के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण भी जरूरी है। पर्यावरण को बचाए रखना हम मानवों का कर्तव्य है और ये पर्यावरण हमारे जीवन की एक अभिन्न अंग है। किसी भी पर्यटन स्थल प्राकृतिक सुंदरता से समृद्ध होता है लेकिन अगर मानव द्वारा किसी प्रकार की क्षति एवं नुकसान होने से प्राकृतिक आपदाएं बढ़ जाती हैं एवं प्रकृति का सारी सुंदरताएं खत्म हो जाती है पर्यटन एवं प्राकृति का गहरा संबंध इसलिए है कि पर्यटन जब भी बनाया जाता है तो प्राकृति एवं वाहॉ की मनोरम स्थल सारी सुविधाएं आवागमन की सुविधा, पानी की सुविधा, सड़के, ट्रांसपोर्ट की सुविधा, प्लेन की सुविधा, दुकानें, कैफे इत्यादि की सुविधा होता है। प्राकृति का सुन्दर एवं सौंदर्य एवं संरक्षित रखने के लिए हमें और हमारे सरकार को इस पर ध्यान देने की जरूरत है। अगर उन स्थलों पर अनियंत्रित पर्यटन बढ़ता है तो वहां की पारिस्थितिक तंत्र पर उनका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है वहॉ की किसी प्रकार के नुकसान जैसे पेड़ काटना, जीव जंतु को मारना, पेड़ काटकर बड़े–बड़े इमारतें बनाना यह सभी से बचाना हम मानव का कर्तव्य है एवं जिम्मेदारी है। प्राकृतिक और पर्यटन में सामंजस से बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक को बचाना होगा क्योंकि प्राकृति है तभी पर्यटन बनाया जा सकता है एवं वहॉ टूरिस्ट लोग आन्नंद का अनुभव कर सकता हैं। ज्यादातर पर्यटन प्राकृतिक से जुड़ी रहती हैं चाहे वह ग्रामीण पर्यटन हो, राष्ट्रीय पर्यटन या अंतरराष्ट्रीय यह सभी प्राकृतिक से जुड़ी रहती हैं। पर्यावरणीय वातावरण को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाना हम मानवों एवं जिम्मेदार नागरिकों का कर्तव्य है तभी हमारे देश के पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है, सुरक्षित रह सकता है।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल :– भारत में कई ऐसे स्थान है जहां प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण हैं, जो उनका सुनने मात्र से शांति एवं सुकून मिलती है एवं वहां जाने के लिए मान लालायत रहती है जैसे हिमालय, कश्मीर की घाटी, कंचनजंगा, सिक्किम, राजस्थान मरुस्थल, केरल, अंडमान निकोबार, छत्तीसगढ़ राज्य, झारखंड राज्य, बिहार राज्य, इत्यादि यहां की प्राकृतिक पर्यटन देखते

ही बनता है। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा गया है यहाँ बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाएं, झीले और घने जंगल यहां की जीव–जंतु पर्यटकों के मन को मोहते रहती है। डल झील, गुलमर्ग झील, सोनमर्ग झील, और पहलगाम जैसे स्थान वहां के लिए प्रसिद्ध है।

हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ न केवल ऊंचाई एवं चमत्कारी दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। बल्कि यहाँ प्रमुख पर्यटन स्थल है जैसे मनाली, लेह लद्दाख, शिमला, नैनीताल, मंसूरी, जैसे स्थल हिमालय क्षेत्र में पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। यह सौंदर्य से भरपूर है यहां के वातावरण ने इस स्थान को अवकाश पर्यटन के रूप में तब्दील कर दिया है।

भारत में प्राकृति पर्यटन स्थल :– भारत एक विविधता से भरपूर देश है जहाँ प्राकृति के आद्वितीय स्थल और पारिस्थितिक तंत्र पाए जाते हैं। यहां के पर्वतीय क्षेत्र, समुद्र तट, रेगिस्तान और वन्य जीव अभ्यारण, पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। भारत में प्राकृतिक पर्यटन के प्रमुख स्थलों में निम्नलिखित शामिल है जैसे शिमला, कश्मीर, लेह लद्दाख, गोवा, फूलों की घाटी, अंडमान निकोबार आदि।

सिामला हिमाचल प्रदेश की राजधानी है और वहां का सबसे मशहूर पहाड़ी इलाका है। यहां अपनी हैरान करने वाली सुंदरता को चारों ओर बिखेरा है शायद तभी लोग इसके दीवाने हैं इसके दीवानेपन यात्रियों या पर्यटकों को अपनी तरफ खींच के रखा है। याहां की बर्फ से ढकी पहाड़ एवं वातावरण बहुत ही प्राकृतिक सौंदर्य एक अजीब सी महसूस होती है पहाड़ों का सैर करते समय जहां आपको अन्य सौंदर्य पूर्ण स्थलों को देखने का मौका मिलेगा जैसे समर हिलस, हरियाली युक्त पहाड जो आपको बेहद शोभित नजारा देगा। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक हर पल का नजारा अंतर्मन को लुभावना लगता है। शिमला सिमर हिल्स एक प्राकृति के गोद में बसी है। चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच बसी ऐ स्थित समतल क्षेत्र पर्यटकों का आकर्षण का केंद्र है। प्राकृति एवं पहाड़ों से प्रेम करने वालों को यह जगह बेहद आनंद का अनुभव करेंगे आप यहां बैठकर सूरज को ढलते हुए देख पाएंगे। शिमला में एक और जगह है द स्केंडल पॉइंट यहां की ढलते सूरज एवं उगते सूरज की नजर बहुत ही सुंदर सौन्दर्य वातावरण यह नजारा बहुत मनलुभावना लगता है। घाटी के सुंदर नजारों का लुफ्त उठाते हुए आप अपनी यात्रा का पूरा कर सकते हैं। द शिमला स्टेट म्यूजियम यहां ब्रिटिश वास्तुकला बनाया गया है यह संग्रहालय शिमला के प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। शैक्षिक दृष्टि से भी लोगों के बीच प्रचलित है यहां मौजूद कलात्मक जैसे चित्र कला मूर्तियों और हस्तशिल्प यहां की संस्कृति के बारे में जानने के लिए प्रेरित करती हैं। यहां की चाडवीक फॉलस प्रसिद्ध है इस नाम की उत्पत्ति चिडकु झार से हुई है जिसमें चिड़कु का अर्थ है गौरैया, गौरैया या झार का अर्थ है झरना वहां की स्थानीय लोगों का कहना है कि गौरेया ही इतने ऊंचे झरने तक पहुंच सकता है इसलिए इसका ये नाम पड़ा है बहुत घने देवदार का जंगल है यह झरना करीब 100 मीटर की ऊंचाई से गिरती है। पहाड़ों से गिरता स्वच्छ एवं शुद्ध पानी पत्थरों पर जब गिरता है जैसे इसके तीखे बहाव पत्थरों को काट देगा।

काश्मीर – जम्मू कश्मीर उत्तर भारत का एक ऐसा राज्य है जहां की प्राकृतिक पर्यटन स्थल बहुत ही प्रबल हैं। हालांकि 26 सालों से चल रहे आतंकवाद के कारण बहुत कुछ छिन्न– भिन्न हो चुका है इसके बावजूद भी वहां की पर्यटन स्थल दुनिया भर के लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। इसके तीन क्षेत्र जम्मु, लेह लदाख और काशमीर के हजारों पर्यटन स्थल आज भी अपनी शोभा को बनाए रखा है।

झारखंड के पर्यटन स्थल :– भारत में ही प्राकृतिक के अंदर बसे एक राज्य प्राकृति पर्यटन के लिए भी प्रसिद्ध है झारखंड के अंदर बहुत सारे ऐसे पर्यटन स्थल हैं जो ग्रामीण और शहरी पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। झारखंड के प्राकृतिक पर्यटन स्थल हजारीबाग है। यह झारखंड का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो अपनी सुरम्य पहाड़ी एवं झिलों के लिए प्रसिद्ध है हजारीबाग नेशनल पार्क यहां के प्रमुख आकर्षण केन्द्र में से एक है। जहां पर्यटक वन्य जीव का आनंद ले सकते हैं। झारखंड में ही जैसे रांची में कांचघर, मखनिया डैम, कुरवा झील, पतरातू के सुंन्दर पहाड़ीयां पर्यटक को बेहद आकर्षित करता है। झारखंड में प्राकृतिक के साथ–साथ खनिज संपदा का बड़ा भंडार है। जैसे सोना–चांदी, जस्ता, लोहा, अल्मुनियम, अभ्रक इत्यादि यह प्राकृतिक के गर्भगृह में समाया है। जिसे लोगों का जीवन यापन की सुविधा भी हो गई है। यहां की पर्यटन स्थल की बात किया जाए तो बहुत सारे धार्मिक एवं प्रकृतिक पर्यटन स्थल है जैसे पलामू एवं गढ़वा जिला में ऐसे कई पर्यटन स्थल है जो हमारे देश स्तर का है यहां पर हर वर्ष मेले का आयोजन भी किया जाता है गढ़वा में ही मां गढ़देवी, भंडरिया थाना क्षेत्र के घुरकी की प्रखंड में प्राकृतिक के गोद में बसा सुखाल्दारी झरना, गुरु सिंधु जलप्रपात, नगर बंशीधर मंदिर, खोनहर नाथ मंदिर इत्यादि। पलामू जिला के बेतला नेशनल पार्क, महुआडांड़ में लोध जलप्रपात, सुगवा बांध, इत्यादि प्राकृतिक पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है यहां स्थानीय लोगों के से लेकर भारत के कई जगह से यह

प्राकृतिक सौंदर्य को देखने पर्यटक लोग आते हैं और आनंद का अनुभव करते हैं। मन मस्तिष्क कों शांति भी मिलती है प्राकृति पर्यटन के साथ–साथ ऐतिहासिक, धार्मिक एवं संस्कृति पर्यटन भी है यहां की नदियां, जंगली वन्य प्राणी प्रकृति के आवासों का निरीक्षण करने के लिए पर्यटक जंगलों में जाते हैं।

प्राकृतिक पर्यटक के विभिन्न रूप :– प्राकृतिक की कई विविधताएं हैं जो पर्यटन के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बनती हैं। हर रूप की अपनी अलग–अलग खूबसूरती और महत्व है और यह पर्यटकों को हर बार नया अनुभव प्रदान करता है। पर्वत और पहाड़ पहाड़ों का आकर्षण हर पर्यटन स्थल में विशेष होता है। हिमालय की ऊंची चोट्टियां भारतीय उपमहाद्वीप के कश्मीर और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यह स्थल साहसिक पर्यटन के लिए भी प्रसिद्ध है जैसे टैकिंग, पर्वतारोही और पैराग्लाइडिंग। हिमालय की शांतिपूर्ण वातावरण पर्यटक आत्म शांति का अनुभव कर सकते हैं। पर्वतों का यह सौन्दर्य न केवल मनोरंजन का कारण बनता है बल्कि यह मानसिक तनाव को कम करने और शांति प्रदान करने का एक अद्भुत तरीका है।

नदियों और जला य भी पर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण के केन्द्र होते है गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, जैसी नदियां धार्मिक सांस्कृतिक और प्राकृतिक दृ ष्टिकोण से महत्वपूर्ण है इन नदियों के किनारे बसे पर्यटन स्थल पर्यटको के लिए बहुत आकर्षक होते हैं जहां उन्हें धार्मिक दृष्टिकोण से शांति मिलती है और साथ ही इन जलाशयों के आस–पास के प्राकृतिक दृ श्य अद्धत होते हैं।

पर्यावरणीय संरक्षण की जिम्मेदारी :– प्राकृतिक संसाधनों की अत्यधिक उपयोग और संरक्षण की दिशा की अपेक्षा भविष्य में पर्यावरणीय संकट को जन्म दे सकता है। इसलिए जरूरी है कि पर्यावरण पर्यटन स्थल पर जाने से पहले हमें सुनिश्चित कर लेना चाहिए की प्रकृति के लिए जिम्मेदार नागरिक बने। पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझे और इसके सतत विकास के लिए हमेशा तात्पर्य रहे। प्रकृति को सुरक्षीत रखने, पेड़ पौधे को एवं जंगली जानवर यहां की खनिज संपदा सुरक्षा के लिए सरकार से मांग करनी चाहिए। जल की सुविधा और सड़क मार्ग इत्यादि का व्यवस्था करना चाहिए। प्रकृति पर्यटन के संबंधित हमें अपनी जिम्मेवारी पर खरा उतरने की जरूरत है यहां की साफ सफाई शुद्धता एवं पर्यावरण संरक्षण को बनाये रखना हमें अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

निष्कर्ष :– प्राकृतिक और पर्यावरण का मिलता जुलता संबंध है। जो की बहुत ही महत्वपूर्ण है। पर्यटन जहॉ हमारी यात्रा का अनुभव और आनंद बढ़ता है वही यह हमें प्राकृति के प्रति जागरूक करता है जब हम प्राकृ तिक स्थलों का दौरा करते हैं तो हम न केवल शांति और आनंद प्रदान करते है बल्कि प्राकृतिक के महत्वों को समझने का एक अवसर भी देता है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम पर्यटन करते समय पर्यावरण और प्रकृतिक संसाधनों का संरक्षण करें ताकि आने वाले आपदाए एवं विविधाए को टाला जा सके इस प्राकृतिक सौंदर्य को बचाने के लिए, हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए। और प्राकृतिक से जुड़ी पर्यटनों को भी सुरक्षित रखा जा सके ताकि पर्यटक प्रकृति का आनंद और शांति का अनुभव कर सके। प्राकृति को बचाए रखने से हमें बहुत से लाभ हो सकते हैं।

संदर्भ :–

- https://igntu-ac-in.
- https://www-tourismtoday-com.